Str. 1292, 56. Calc. Ausg. D. und E. 规即 5和 1

Str. 1293, 57. Die Scholien: वानापुरित्यन्ये। — Calc. Ausg. वा-तापुर्न्छः। — 58. Calc. Ausg. und D. शम्बरा:, die Scholien: शं वृ-पोति शम्बरः।

Str. 1294, 59. B. und D. राक्षिः, die Scholien wie wir. — 60. Calc. Ausg. und D. कृष्मसारः, die Scholien wie wir. — Wir lassen hier die nähere Bestimmung einiger dieser Thiere nach dem Scholiasten folgen: रूर्मक्लक्षशारः। न्यङ्गस्त्रिकेण विपुलाह्नतः। शन्वरा प्रत्पक्रिणः। चमूर्मक्षियोवा धवलकेश्रावालिधः। चीनः शित-क्रीडः। चमरे। गाविशेषः। स्रथो क्रिणप्राया मृड्यकः। राक्षियो राक्षि-तस्रेतराजीयुकः। करली स्त्रियाम् यहारः।

कदली तु विले शेते मृडभन्ने।विकर्वुरिः। नीलाये रामिभर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायुता ॥

कन्दली श्यामवर्णा त्रस्तायामा महोद्देश । त्रिलिङ्गा ज्यम् पृथता विन्डमान् Str. 1295, 62. Calc. Ausg. वातप्रमिर

Str. 1297, 68. Calc. Ausg. und D. निकाको, die Scholien: एता पुंछते प्रियो । — 70. Die Scholien: म्रन्यत्र महत्रपुत्रे । — 71. Calc. Ausg. und D. गोलिका, die Scholien wie wir.

Str. 1299, 74. Calc. Ausg. र्क्तपुच्छ्का, die Scholien wie wir. — 75. Dieselben: प्रतिसूर्य शेते प्रतिसूर्यशयानक इत्येकं नामेत्यन्ये।

Str. 1300, 77. Calc. Ausg. und D. वृष्ट्याचनः, die Scholien wie

ा Str. 1303, 88. Die Scholien: रृशावेव कर्णावस्य रृक्कर्णः । मृत रृव गोकर्णः क्रिकेट कार्णावस्य रृक्कर्णः । महिल्लेट कर्ण